पाठ-15

तुम कब जाओगे, अतिथि

(प्राचीन काल से हमारे देश में अतिथि को देवता समान माना जाता है। इसलिए यहाँ 'अतिथिदेवो भव' की उक्ति लोकप्रिय रही है। इसी संस्कार के कारण आज भी हमारे देश के लोग अतिथि-सत्कार को बहुत महत्व देते हैं। लोगों की इसी भावना से लाभ उठाने के लिए कुछ स्वार्थी लोग दूसरों के घर अतिथि बनकर जाते हैं। उनके अतिथि-सत्कार के सामर्थ को अनदेखा करके बिना प्रयोजन के उनके घर अधिक समय तक ठहरते हैं। इसके फलस्वरूप गृहस्थ को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी बात पर व्यंग्य करते हुए लेखक ने ऐसे स्वार्थी लोगों को चेतावनी दी है, ताकि इनके कारण लोग अन्य अतिथियों के साथ दुर्व्यवहार न करें।)

आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है- तुम कब जाओगे, अतिथि ?

तुम जहाँ आराम से बैठे शरबत पी रहे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो न! इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं। विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ। तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है, तुम्हारे सतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनाट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो। तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी जमीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली, तुम मेरी काफी मिट्टी खोद चुके। अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती ?

उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुस्कराहट के साथ मैं

DAILY ASSAM

तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते किया था। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्जियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी। आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमाननवाजी की छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुसकान लिए घर में ही बने रहे। हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे। स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे, वहाँ से नीचे उतर हमने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को तुम्हें सिनेमा दिखाया। हमारे सत्कार का यह आखिरी छोर है, जिससे आगे हम किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद भावभीनी विदाई का वह भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब तुम विदा होते और हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते। पर तुमने ऐसा नहीं किया।

तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा, ''मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।''

यह आघात अप्रत्याशित था और इसकी चोट मार्मिक थी। तुम्हारे सामीप्य की बेला एकाएक यूँ रबड़ की तरह खींच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था। पहली बार मुझे लगा कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

''किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे।'' मैंने कहा। मन ही मन एक विश्वास पल रहा था कि तुम्हें जल्दी जाना है।

''कहाँ है लॉण्ड्री ?''

''चलो चलते हैं।'' मैंने कहा और अपनी सहज बनियान पर औपचारिक कुर्ता डालने लगा।

''कहाँ जा रहे हैं ?'' पत्नी ने पूछा।

''इनके कपड़े लॉण्ड्री पर देने हैं।'' मैंने कहा।

मेरी पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं। आज से कुछ बरस पूर्व उनकी ऐसी आँखें देख मैंने अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त कर बिस्तर खोल दिया था। पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो मन छोटा होने लगता है। वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि अधिक दिनों तक ठहरेगा।

और आशंका निर्मूल नहीं थी, अतिथि! तुम जा नहीं रहे। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो। तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब

लुप्त हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते। बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोनलों से टप्पे खाकर फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है। अब इसे न तुम हिला रहे हो, न मैं। मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो। शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए। परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, महँगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी जिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है। सौहार्द अब शनैः - शनैः बोरियत में रूपांतरित हो रहा है। भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे। किस अदृश्य गोंद से तुम्हारा व्यक्तित्व यहाँ चिपक गया है, मैं इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा हूँ। बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है- तुम कब जाओगे, अतिथि ?

कल पत्नी ने धीरे से पूछा था, "कब तक टिकेंगे ये ?"

मैंने कंधे उचका दिए, "क्या कह सकता हूँ!"

"मैं तो आज खिचड़ी बना रही हूँ। हल्की रहेगी।"

"बनाओ।"

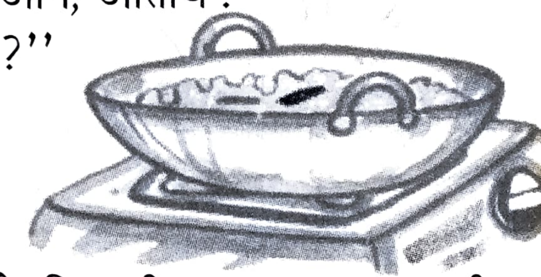

सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए। अब भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक जाना होगा। तुम्हारे-मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं। तुम्हारे जाने का यह चरम क्षण है। तुम जाओ न अतिथि!

तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है न! दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं। होम को इसी कारण स्वीट-होम कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें। तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, पर सोचो प्रिय, कि शराफत भी कोई चीज होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है।

DAILY ASSAM

अपने खर्राटों से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी। आशा है, वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे। मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं स्टैंड नहीं कर सकूँगा और लड़खड़ा जाऊँगा। मेरे अतिथि, मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ। मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं। एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। तुम लौट जाओ अतिथि! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा। यह मनुष्य अपनी वाली पर उतरे, उसके पूर्व तुम लौट जाओ!

उफ़, तुम कब जाओगे, अतिथि?

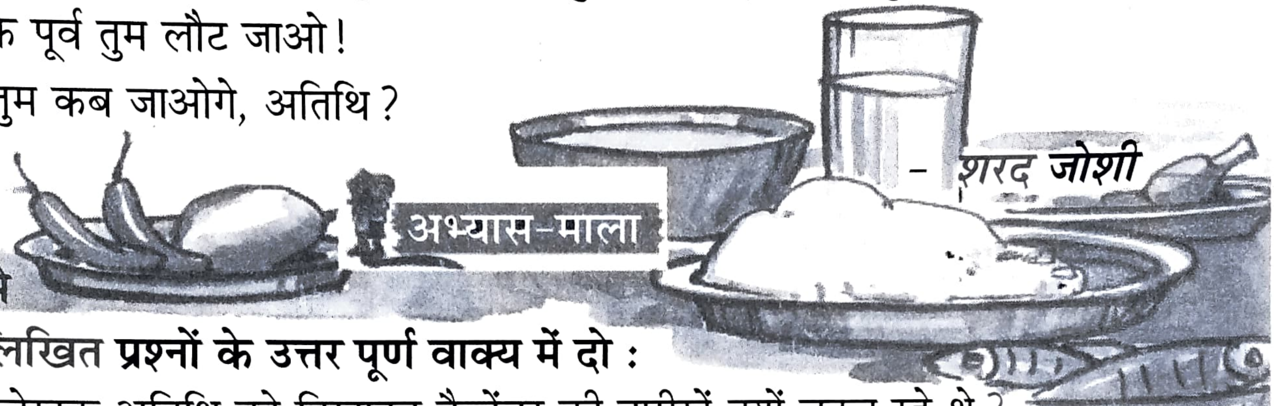

– शरद **जोशी**

अभ्यास-माला

पाठ से

1. निम्नलिखित **प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दो :**

(क) लेखक अतिथि को दिखाकर कैलेंडर की तारीखें क्यों बदल रहे थे?

(ख) लेखक तथा उनकी पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया था?

(ग) मेहमान के स्वागत में दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई थी?

(घ) तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

(ङ) सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो जाने पर क्या हुआ?

2 निम्नलिखित **प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दो :**

(क) मेहमान के आते ही लेखक पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

(ख) मेहमान के स्वागत में रात्रि-भोज को किस प्रकार गरिमापूर्ण बनाया गया था?

(ग) लेखक के लिए कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और क्यों?

(ङ) लेखक का सौहार्द बोरियत में क्यों बदल गया?

(च) अतिथि कब देवता होता है और कब राक्षस हो जाता है?

3. **उत्तर दो :**

(क) लेखक ने अतिथि को विदा लेने का संकेत किन-किन उपायों से दिया?

(ख) अतिथि के अपेक्षा से अधिक रुक जाने पर लेखक के मन में क्या-क्या प्रतिक्रियाएँ हुईं, उन्हें छाँटकर क्रम से लिखो।

पाठ के आस-पास

1. घर में जब कोई अतिथि आता है तो अंतरंग क्षणों में उससे कैसी बातें होती हैं?

योग्यता-विस्तार

1. अतिथि से संबंधित अनेक लोककथाएँ प्रचलित हैं। बुजुर्गों से तथा पुस्तकालय की सहायता से ऐसी लोककथाएँ एकत्र करो और कक्षा में सुनाओ।
2. अपने घर के कामों की सूची बनाओ। उनको घर के कौन-कौन से सदस्य करते हैं, उसके अनुरूप नीचे की तालिका में ☑ निशान लगाओ :

काम	मैं	दादी	माँ	पिता	भाई	बहन	चाचा
घर का सामान लाना							
घर की सफाई करना							
खाना पकाना							

भाषा-अध्ययन

1. **निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित करो :**
   (क) हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाएँगे। (नकारात्मक वाक्य)
   (ख) किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे। (प्रश्नवाचक वाक्य)
   (ग) देवता और मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। (सकारात्मक वाक्य)
2. **समझो और प्रयोग करो :**
   (क) निम्नलिखित वाक्यों में 'चुकना' क्रिया का प्रयोग ध्यान से देखो :
   (अ) तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी जमीन पर अंकित कर **चुके**।
   (आ) तुम मेरी काफी मिट्टी खोद **चुके**।
   (इ) हम तुम्हें आदर-सत्कार के उच्च बिंदु पर ले जा **चुके** थे।
   (ई) शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय **चुक** गए।

अब 'पढ़ना', 'खेलना', 'खाना', 'देखना' क्रियाओं के साथ 'चुकना' क्रिया का प्रयोग करके वाक्य बनाओ और शिक्षक-शिक्षिका को दिखाओ।

पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
सतत	=	लगातार	सामीप्य	=	निकटता
एस्ट्रॉनाट्स	=	अंतरिक्ष यात्री	औपचारिक	=	रीति के अनुसार
बैंजनी	=	बैंगनी, बैंगन के रंग वाली	निर्मूल	=	बिना मूल (जड़) के
मेहमाननवाजी	=	अतिथि-सत्कार	कोनलों से	=	कोनों से
छोर	=	किनारा, सीमा	सौहार्द्र	=	सरल हृदय का भाव
भावभीनी	=	भाव से पूर्ण	शनैः-शनैः	=	धीरे-धीरे
मार्मिक	=	मर्मस्पर्शी	गुंजायमान	=	गूँजता हुआ